माननीय राज्यपाल हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 24 मई, 2016 को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में खेल पुरस्कार वितरण, नवनिर्मित फ्लैट्स के उद्घाटन और खेल छात्रावास के शिलान्यास अवसर पर दिया गया भाषण।

आज के इस उत्साहवर्धक और प्रेरणादायी खेलकूद पुरस्कार वितरण समारोह में उपस्थित यहाँ के विधायक श्री मनीष ग्रोवर जी, रोहतक मंडल के आयुक्त श्री चन्द्र प्रकाश जी, मेरे सचिव डा0 अमित कुमार अग्रवाल जी, इस विश्वविद्यालय, जिसने देश में 44वाँ स्थान प्राप्त किया है, के कुलपति श्री वी0 के0 पुनिया जी, रोहतक रेंज के IG Sh. Sanjay Kumar Ji, विश्वविद्यालय की डीन प्रो0 सुनीता मल्होत्रा जी, अन्य विश्वविद्यालयों के कुलपति महानुभाव–डा0 ओ0 पी0 कालड़ा जी, श्री अश्विनी सभ्रवाल जी, डा0 आशा कादियान जी, Faculty Members, अन्य उपस्थित महानुभाव, मेरे ऐसे सभी आत्मीय और प्रिय खिलाड़ी जिनको मैने आज पुरस्कृत किया है, media persons, उपस्थित अन्य सभी भाईयो और बहनो!

खेलकूद का पुरस्कार वितरण इतनी अच्छी उपस्थिति में, इतने अच्छे ढंग से संपन्न हो रहा है इसका अवलोकन कर, इसे देखकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। आपका विश्वविद्यालय अगर खेलकूद में इतना आगे है, राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम कमा रहा है तो मैं सोच रहा था कि पढ़ाई–लिखाई के क्षेत्र में भी इतना ही अव्वल है कि नहीं? क्योंकि अक्सर ऐसा देखा जाता है कि खेलकूद में जो आगे जाता है वह पढ़ाई में पीछे रह जाता है। परन्तु मैं नहीं सोचता कि यहां ऐसा होगा। अगर ऐसा होता तो यह विश्वविद्यालय पूरे देश में 44वाँ रैंक प्राप्त नहीं करता। क्योंकि राष्ट्रीय संस्था के द्वारा जब विश्वविद्यालयों को रैंक देने के लिए मूल्यांकन किया जाता है तो वह सारी चीजें देखती है, सारी सुविधाएँ देखती है। Faculty Members की योग्यता, उनकी qualification, उनकी संख्या, विश्वविद्यालय का infrastructure और कुल मिलाकर विश्वविद्यालय का वातावरण इसको देखकर ही रैंकिंग होती है।

एक पुरानी कहावत थी कि खेलोगे कूदोगे तो बनोगे खराब और पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब। इस पुरानी कहावत का कोई मतलब नहीं है। यह पता नहीं क्यों बनी है। क्योंकि जिसका स्वास्थ्य खराब है वह नवाब कैसे बन सकता है। आप नवाब हैं, आपमें योग्यता है, आपमें कोई आंतरिक क्षमता है इसका दर्शन तो बाद में होता है सबसे पहले तो व्यक्ति को देखा जाता है। ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। आप अगर अच्छे पढ़े–लिखे हैं लेकिन स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो न आप अपने काम के हैं, न परिवार के काम के हैं और राष्ट्र के काम के तो हैं ही नहीं। आप कल्पना करो कि कोई भी डॉक्टर जिसका

स्वास्थ्य खराब है, अपने क्लीनिक में बैठा खाँस रहा है, चेहरे पर कोई चमक नहीं है तो कोई मरीज अगर आएगा भी तो उसको देखकर ही वापस लौट जाएगा कि यह तो खुद बीमार है हमें क्या देखेगा?

इसलिए हम जब विचार करते हैं तो इस personality development, व्यक्तित्व विकास के लिए, आपकी महिमा के लिए सबसे पहली आवश्कता कोई है तो वह स्वास्थ्य है। अंग्रेजी में एक बहुत सुंदर कहावत है कि "Wealth is lost, nothing is lost." आज हम सब लोग जो धन के पीछे पड़े हैं, संपत्ति के पीछे पड़े हैं, धन और संपत्ति के आगे हम सब कुछ कुर्बान कर देते हैं– आपस का भाईचारा, आपस का प्रेम। भाई–भाई में लड़ाई, कत्ल, हिंसा ये सब संपत्ति के लिए होते हैं। लेकिन हमारा देश ऐसा है कि इसमें मान्यता यह है कि wealth की कोई कीमत नहीं है। पैसा जो है वह हाथ का मैल होता है। अगर यह चला गया तो समझ लो कुछ नहीं गया। अगर आपमें दम है, पुरूषार्थ है तो पैसा तो बहुत कमाया जा सकता है। इसलिए Wealth is lost, nothing is lost.

लेकिन health के बारे में कहा गया है कि health is lost, something is lost. अगर तंदुरूस्ती आपकी चली गई, आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है तो फिर आपका कुछ खो गया है। और भारत देश के अंदर एक तीसरी चीज और है जिसको इतना ज्यादा महत्व दिया गया है और उसमें कहा गया है कि character is lost, everything is lost. आपको चलते–फिरते देखकर, कहीं भी जब आप संपर्क में आते हैं तो आपको देखकर देखने वालों की तबीयत प्रसन्न नहीं होती, वे मोहित नहीं होते, वे आपको देखकर चमत्कारित नहीं होते तो फिर आपका कोई मतलब नहीं है। और ऐसा अगर होना है तो सबसे पहली आवश्यकता स्वास्थ्य है।

मैं आपको एक उदाहरण दूँ। स्वामी विवेकानंद जी से अच्छा तो कोई विद्वान नहीं है। यद्यपि वे बहुत कम जीए, 1863 में जन्में और 1903 में चले गए, 38–39 वर्ष की आयु ही उन्होंने यहाँ पर बिताई। लेकिन कैसे थे वे? 1893 में अमेरिका में जाकर पूरे विश्व के धर्म प्रचारकों के गाल पर जाकर उन्होंने तमाचा मारा कि आप सब लोग बैठकर क्या चर्चा कर रहे हो? अपने संप्रदाय को श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहते हो? उन्होंने सबको नतमस्तक कर दिया और इतना नतमस्तक किया कि पूरे विश्व के वहां बैठे हुए विद्वान यह कह रहे थे कि ये आए कहाँ से हैं? जब परिचय देते हुए आयोजकों ने कहा कि हिन्दुस्तान से आए हैं तो लोगों को आश्चर्य हुआ कि जिस हिन्दुस्तान में ऐसे लोग हैं वह हिन्दुस्तान गुलाम क्यों है?

लेकिन इतने विद्वान हो जाने के बाद भी उनका शरीर कैसा था? कितना सुडौल था? वे खेलकूद में कितनी रूचि लेते थे? इस बारे एक बहुत ही विचित्र घटना घटी। तब

देश गुलाम था। वे ट्रेन में यात्रा कर रहे थे। उसी डिब्बे में कुछ अंग्रेज बैठे थे। उन अंग्रजों ने स्वामी अर्थात संन्यासी परंपरा के ऊपर आपस में बातचीत करना शुरू किया। वे यह समझ रहे थे कि ये जो संन्यासी बैठे हैं इनको अंग्रेजी तो आती नहीं होगी। यह समझकर वे अंग्रेजी भाषा में स्वामी अर्थात संन्यासी परंपरा का मजाक बना रहे थे। कुछ देर तक तो स्वामी जी ने सुना। लेकिन जब वे ज्यादा बोलते चले गए तो उनसे सहन नहीं हुआ। और इसलिए स्वामी जी ने उनके सामने अंग्रेजी में बोलना शुरू किया कि आप संन्यासी के बारे में जो कुछ बोल रहे हैं इसका मतलब जानते हैं? भारत का संन्यासी कैसा होता है, इसको आप समझते हैं? आपको इतनी भी तमीज नहीं है कि किसी राष्ट्र की परंपरा का सम्मान कैसे किया जाता है? वे यह सब अंग्रेजी में बोल रहे थे। इतने चुभते हुए और कठिन शब्द स्वामी जी बोल रहे थे कि अंग्रेज एकदम गुस्से में आ गए। अंग्रेज तो वैसे ही लाल होते हैं। गुस्से के कारण और लाल हो गए। स्वामी जी थे अकेले और वे थे चार। वे चारों के चारों वे इतना गुस्से में आ गए कि physical struggle के लिए तैयार हो गए, स्वामी जी को पीटने के लिए तैयार हो गए। जब स्वामी जी ने देखा कि ये तो पीटने के मूड में आ रहे हैं तो स्वामी जी अपने स्थान पर खड़े हुए। आपने देखा ही है उनका फोटो, वे अचला पहनते थे–ढीला कुर्ता। उन्होंने अंग्रेजों के सामने खड़े होकर अपना ढीला कुर्ता फैंकना शुरू किया। जैसे ही अंग्रेजों ने उनके भुजदंड देखे तो अंग्रेजों को लगा कि ये तो इतने सुडौल, इतने मजबूत, इतने स्वस्थ हैं, इनसे भिड़ना ठीक नहीं।

स्वामी विवेकानंद जी नौजवानों को कहते थे," Muscles of iron and the nerves of steel." वे ऐसे नौजवान चाहते थे जिनकी माँसपेशियाँ लोहे की हों और स्नायु स्टील के हों। वे जैसा कहते थे खुद भी वैसे ही थे। जब अंग्रेजों ने उनके इस तरह के सुडौल भुजदंड देखे तो सोचा कि हमने अगर उन पर दो–चार वार कर भी दिए तो इनका तो कुछ बिगड़ेगा नहीं लेकिन यदि इनकी एक मुट्ठी, भुजदंड अगर पीठ पर पड़ गया तो रीढ टूट जाएगी और कभी इलाज नहीं हो सकता। इसलिए वे हाथ जोड़कर, क्षमा माँगकर चले गए। जितने लाल हुए थे उतने ही ठंडे पड़ गए। मैं सिर्फ यह प्रतिपादित कर रहा था कि जीवन में योग्यता जरूरी है लेकिन योग्यता के साथ–साथ अच्छा स्वास्थ्य बहुत जरूरी है।

मुझे आप सबके बीच में आकर बहुत खुशी है और सबसे ज्यादा खुशी यह है कि आज मैने जिन खेल प्रतिभाओं को यहाँ पर सम्मानित किया है वे हरियाणा का गौरव तो स्थापित करेंगे ही देश के अंदर भी नए–नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे। इस विश्वविद्यालय में 25 अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी हैं, 40 राष्ट्रीय खिलाड़ी हैं और जो अखिल भारतीय

विश्वविद्यालय के खेल होते है उनमें 186 पदक इस विश्वविद्यालय ने जीते हैं। मैं इस विश्वविद्यालय के उन 11 खिलाडियों को भी विशेष बधाई और आशीर्वाद देता हूँ जिन्होंने इसी साल होने वाले रियो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई किया है।

हरियाणा सरकार ने भी एक खेल नीति बनाई है। नीति बनाना, यह तो अलग बात है लेकिन उस नीति को सफल करना नौजवानों के हाथ में है। इसलिए उस नीति की सफलता आप सबके पास है। बहुत अच्छी राशि, बहुत अच्छे पुरस्कार यहाँ विश्वविद्यालय ने दिए हैं। हरियाणा में जो सरकार बनी है वह तो मेरी सरकार है क्योंकि मैं गवर्नर हूँ। मुझे खुशी है कि उन्होंने जो नई नीति घोषित की है उसके अंदर राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं से लेकर राष्ट्रमंडल और एशियाई व ओलंपिक खेलों में पदक विजेताओं के इनाम की राशि को हरियाणा में बढ़ाया गया है। साथ ही उन्हें सरकारी नौकरियाँ भी प्रदान की जा रही हैं।

हरियाणा सरकार ने 2015–16 में एशियाई व पैरा एशियाई खेलों के 89 पदक विजेता ओर प्रतिभागी खिलाड़ियों को 50 करोड़ 65 लाख रूपये दिए और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक पाने वाले 93 अन्य खिलाड़ियों को भी 3 करोड़ 13 लाख रूपये की राशि के नकद पुरस्कार प्रदान किए हैं। इसी प्रकार केरल में आयोजित 35वें राष्ट्रीय खेलों के 236 पदक विजेताओं को 8 करोड़ 69 लाख रूपये की राशि के नकद इनाम दिए गए हैं।

सरकार ने शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू के शहीदी दिवस पर इसी वर्ष से हर साल 23 मार्च को भारत केसरी दंगल का आयोजन शुरू किया है। इसमें प्रथम विजेता को एक करोड़ रूपये, द्वितीय को 50 लाख और तृतीय को 25 लाख रूपये की नकद राशि के इनाम दिए गए हैं। इसी प्रकार इस साल होने वाले ओलंपिक खेलों में भाग लेने वाले हर खिलाड़ी को 15 लाख रूपये की राशि प्रदान की जाएगी। इन ओलंपिक खेलों में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक विजेताओं के लिए क्रमशः 6, 4 और अढाई करोड़ रूपये की नकद राशि के पुरस्कार तय किए गए हैं। राष्ट्रमंडल, एशियाई व राष्ट्रीय खेलों के पदक विजेताओं की इनाम की राशि को भी बढ़ाया गया है।

मुझे खुशी है कि आप जैसे खिलाड़ियों के दमखम पर भारत आज ओलंपिक व अन्य अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में बड़ी शक्ति के रूप में उभर रहा है। 2008 से पहले ओलंपिक में हमारे पदकों की संख्या एक या दो होती थी। 2008 में हमने बीजिंग ओलंपिक में तीन पदक जीते। 2012 में लंदन ओलंपिक में इनकी संख्या दोगुणा होकर 6 हो गई। मुझे विश्वास है इस साल के रियो ओलंपिक में हमारे खिलाड़ी इससे भी कई गुणा अधिक पदक जीतकर भारतीय शक्ति का लोहा मनवाएँगें।

मैं आपको बताना चाहूंगा कि सरकार ने जिस तरह नई नीति के अंदर कुश्ती प्रतियोगिता के लिए राशि तय की है उसी तरह कबड्डी प्रतियोगिता भी चालू करने वाली हैं और उसमें भी इतनी ही राशि के ईनाम हैं– जीतने वाली टीम को एक करोड़ रूपये, दूसरी टीम को 50 लाख और तीसरी टीम को 25 लाख रूपये। मुझे लगता है कि हरियाणा आप सबके बल पर और इन विश्वविद्यालयों के बल पर खेलकूद के क्षेत्र में बहुत अग्रिम भूमिका निभाएगा।

विश्वविद्यालय के लिए, उसकी प्रगति के लिए आप सबको तो मैने पुरस्कृत किया ही है लेकिन इसके साथ–साथ यहाँ पर कुछ फ्लैट्स बने हैं। उन फ्लैट्स का आज लोकार्पण किया है, उद्घाटन किया है। खेलों के लिए अलग से छात्रावास बनाया जा रहा है। उस छात्रावास के लिए UGC से ग्रांट मिली है, कुछ युनिवर्सिटी ग्रांट दे रही है। इसमें उन प्रतिभागियों के ठहरने की व्यवस्था की जाएगी जो समय–समय पर खेल व अन्य गतिविधियों में भाग लेने के लिए आएँगे।

अंत में मैं कामना करता हूं कि यह विश्वविद्यालय खेलों के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी कामयाबी प्राप्त करते हुए ऐसे नौजवान तैयार करे जो हरियाणा को आगे ले जाएँ, देश को जिस बात की आवश्यकता है उसकी वे पूर्ति करें। स्वयं को अच्छा बनाएँ और परिवार की सेवा करते रहें।

जयहिंद!